किशोरों में भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन

शोधकर्ता - लीनुशिखा देवांगन
एम. एड. (प्रशिक्षार्थी)

संबंधन- प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.)

संपर्क – 7646814591

पता – म.क्र. 3126, रावतपुरा कॉलोनी,
फेस 1, मठपुरेना, भाठागांव, रायपुर
(छ.ग.) पिन- 493222

इ.मेल. – leenushikha@gmail.com

शोध मार्गदर्शिका - सुश्री चिन्मयी दास
सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय)

संबंधन - प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.)

संपर्क – 9294603031

सार

किशोरावस्था एक अत्यंत संवेदनशील एवं परिवर्तनशील अवस्था होती है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक स्तर पर तीव्र बदलाव आते हैं। इस अवस्था में किशोरों को अपने परिवेश, संबंधों, तथा आंतरिक भावनाओं के साथ संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता होती है। इस सन्दर्भ में, **भावनात्मक बुद्धि** (Emotional Intelligence) एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक बन जाती है, जो कि व्यक्ति को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करने में सहायता करती है। साथ ही, **समायोजन** (Adjustment) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण के अनुरूप स्वयं को ढालता है।

यह अध्ययन रायपुर जिले के नगर निगम के अंतर्गत आने वाले अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 11 वी एवं 12 वी के किशोर विद्यार्थियों पर केन्द्रित था | इस अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि किशोर आयु के बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं समायोजन क्षमता के मध्य किस प्रकार का संबंध है ।

शोध अध्ययन में कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमे 50 बालक एवं 50 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया | शोधकार्य में उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए पूर्व निर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है। भावनात्मक बुद्धि के मापन हेतु डा. जे. सी. आजवानी, डा. ए. सेठी, डा. गौतमी भट्पहरी और एम्. हुसैन के सांवेगिक बुद्धि परीक्षण तथा समायोजन चर के मापन हेतु प्रो. ए.के.पी. सिन्हा और प्रो. आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन परीक्षण का उपयोग किया गया ।

यह अध्ययन किशोरों को भावनात्मक रूप से स्वस्थ और सफल बनाने के लिए आवश्यक हस्तक्षेपों और रणनीतियों को विकसित करने में मदद करता है| इस शोध के द्वारा यह अनुशंसा की जाती है कि किशोरवय बालक एवं बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि और उचित समायोजन के बाधित होने के विषमताओं को जानने व परंपरागत मान्यताओं को खण्डित करके उनका नैतिक तथा सामाजिक व शैक्षिक रूप से मार्गदर्शन किया जाए।

शब्दावली : भावनात्मक बुद्धि, समायोजन, किशोरावस्था

1. प्रस्तावना

मानव व्यवहार के क्षेत्र में किशोर विद्यार्थियों का अत्यधिक महत्व है | इस अवस्था में बालक में क्रांतिकारी शारीरिक ,मानसिक, सामाजिक एवं सांवेगिक परिवर्तन होते हैं | इस अवस्था में किशोर बुरी आदतों के शिकार भी जल्दी होते हैं | समायोजन करने की शक्ति कम होती है और उनके संवेगों और आवेगों में इतनी परिवर्तनशीलता होती है कि वे प्राय: विरोधी व्यवहार करते हैं, जिससे उन्हें समझना कठिन हो जाता है | इस अवस्था में किशोर अपने मूल्यों, आदर्शों और संवेगों में संघर्ष का अनुभव करते हैं, जिसके फलस्वरूप वे अपने आप को द्वंद की स्थिति में पाते हैं | उनके मन में कई आकांक्षाये जन्म लेती हैं | जब वे आकांक्षा के अनुरूप फल प्राप्त करते हैं तो आनंद की अनुभूति करते हैं लेकिन यदि उनके प्रगति पथ में बाधाएं, रुकावटें या परेशानियाँ आती हैं तो वे तुरंत टूट जाते हैं | उस समय यदि उनकी भावनाओं को नही समझा गया तो वे पहले उदास और उसके बाद आक्रामक, विद्रोही एवं विद्वेषी बन जाते हैं | अत: इस अवस्था में विद्यार्थी के भावनात्मक पक्ष का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है |

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह योग्यता है जो संवेग का अभिज्ञान तथा संवेगों को व्यवस्थित करती है | यह व्यक्तिगत कुशलता है जो भिन्न - भिन्न व्यक्तियों में भिन्न - भिन्न मात्रा में व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है |

समायोजन हेतु व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं | संवेग सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करते हैं | अधिक भावनात्मक भुद्धि वाले व्यक्ति कम भावनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति की अपेक्षा अपने व्यवहार में अपरिवर्तन करने में कम सफल होते हैं | यह आज के सन्दर्भ में शोध का विषय है और समायोजन के क्षेत्र में किस प्रकार का व्यवहार करते हैं और क्या भिन्न भावनात्मक बुद्धि ,उपलब्धि को भी प्रभावित करती है, इन्ही प्रश्नों को मस्तिष्क में रखकर शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन का लक्ष्य किशोर बालक बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना निश्चित किया गया है |

भावनात्मक बुद्धि का अर्थ

भावनात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और उन्हें सामाजिक रूप से उपयुक्त ढंग से व्यक्त करने में सक्षम होता है।

सांवेगिक बुद्धि पद का प्रतिपादन सर्वप्रथम पीटर शैलोवी व मेसर ने 1990 में किया था। उनके अनुसार "अपने तथा दूसरे व्यक्तियों के संवेगों का परिक्षण उसे और उनमें विभेदन करने की योग्यता तथा प्राप्त सूचना के अनुसार अपने चिंतन तथा व्यवहारों को निर्देशित करने की योग्यता ही सांवेगिक बुद्धि है।"

परिभाषाएँ

गोलमैन के अनुसार :- "संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के उसके के एवं दूसरोंके संवेगों को पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में और अपने संबंधों के दौरान भली प्रकार से साधने में सहायक होती है।"

सोलवे मैयर के अनुसार :- "संवेगात्मक बुद्धि संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने, उन्हें समझने उसका प्रबन्धन करके एवं उन्हें प्रयोग में लाने की योग्यता है।"

मुख्य घटक

1. **आत्म-जागरूकता**
2. **आत्म-नियंत्रण**
3. **प्रेरणा**
4. **सहानुभूति**
5. **सामाजिक कौशल**

समायोजन का अर्थ

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति बाह्य और आंतरिक परिवेश में संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है। समायोजन के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक, शैक्षणिक, पारिवारिक, तथा व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करता है।

मुख्य क्षेत्र

1. पारिवारिक समायोजन
2. सामाजिक समायोजन
3. भावनात्मक समायोजन
4. शैक्षणिक समायोजन

किशोरों के विकास में भावनात्मक बुद्धि की भूमिका

1. आत्म-संवेदनशीलता बढ़ती है
2. संघर्ष प्रबंधन में मदद मिलती है
3. अवसाद एवं तनाव से निपटने की क्षमता विकसित होती है
4. सामाजिक संबंध अधिक सकारात्मक बनते हैं

समायोजन एवं भावनात्मक बुद्धि के मध्य संबंध

कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि जिन किशोरों की भावनात्मक बुद्धि उच्च होती है, उनका समायोजन स्तर भी बेहतर होता है। वे तनाव, पारिवारिक मतभेद, सामाजिक दबावों आदि को बेहतर तरीके से संभाल पाते हैं।
विशेष रूप से:

1. **भावनात्मक जागरूकता** से आत्म-स्वीकृति बढ़ती है
2. **सहानुभूति** सामाजिक संबंध मजबूत करती है
3. **आत्म-नियंत्रण** भावनात्मक संतुलन बनाए रखता है

2. अध्ययन का महत्व

संसार के समस्त प्राणियों की भांति बौद्धिक प्राणी मनुष्य भी दिन-रात क्रियाशील रहता है। सोना-जागना, खेलना, कार्य करना, सोचना, चिंतन करना इत्यादि उसकी विभिन्न क्रियायें होती है। सहज क्रियाओं को छोड़कर मनुष्य की सभी क्रियायें प्रेरकों पर आधारित होती है। जिनके मूल आवश्यकतायें होती है। इन आवश्यकताओं से प्रेरित होकर मनुष्य लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। जब वह लक्ष्य प्राप्त कर लेता है तो उसका तनाव कम अथवा समाप्त हो जाता है। परन्तु कभी-कभी मनुष्य को लक्ष्य प्राप्त करने में बहुत सी कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप उसके मन में संवेगात्मक उथल-पुथल व तनाव रहता है। इस तनाव के कारण व्यक्ति परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित नही कर पाता एवं इसीके परिणाम स्वरूप कई व्यक्ति असमायोजित परिस्थिति में अवांछनीय मार्ग को ग्रहण कर लेते हैं, जिसके कारण उसकी इच्छाओं में भी परिवर्तन हो जाता है तथा वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नही कर पाते। विशेष कर शिक्षक विद्यालयों की विभिन्न परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित करने की भरसक प्रयत्न करते हैं, और यदि वह समायोजित नहीं हो पाते है तो वे स्वयं को कुंठित व हतोत्साहित व हीन महसूस करने लगते है। जिसके परिणामस्वरूप उनके समक्ष और भी समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। ये समस्यायें कई प्रकार की हो सकती है।

चाहे वह विद्यार्थियों व प्राचार्यों के व्यवहार से संबंधित हो, चाहे विद्यालय वातावरण से या फिर किसी अन्य बाधाओं से युक्त। कुसमायोजन की स्थिति में शिक्षक के मन में क्षोभ व अकुलाहट उत्पन्न हो जाते हैं।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति अनंत शक्ति तथा ज्ञान से परिपूर्ण होता है। परन्तु उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक योग्यता आदि में भिन्नता होती है और इन्हीं विभिन्नताओं के कारण प्रत्येक व्यक्ति के समायोजन करने में अंतर होता है। बाल अपराधी बालकों को भी विभिन्न आयु वर्ग एवं उनके किये गये अपराधों के आधार पर विभाजित किया गया है। अतः उनकी आयु एवं अपराध के आधार पर उनमें समायोजन क्षमता तथा संवेगात्मक बुद्धि दोनों में विभिन्नतायें पायी जाती है।

पिछले शोध अध्ययनों में इस समस्या पर विचार नहीं किया गया है इसलिए शोधकर्ता ये समस्या ली है जिसका परिणाम शिक्षा के क्षेत्र में लागू होता है।

भावनात्मक बुद्धि के विकास से बालक अपने एवं दूसरे के भावों को पहचानने तथा अपने आप को अभिप्रेरित करके, अपने संबंधों को प्रबंधित करने की क्षमता को बढ़ाता है। अपराधी बालकों की संवेगात्मक बुद्धि अच्छी होगी तो उनके समायोजन में निरंतर वृद्धि होगी और वे अपने में सुधार करके जीवन को को नई दिशा प्रदान कर सकेंगे।

3. पूर्व में किए गए शोध कार्य

प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान में शोधकर्ता से यह आशा की जाती है कि वह शोध समस्या से संबंधित सम्प्रत्ययों की आवश्यक जानकारी रखें एवं समस्या से संबंधित विभिन्न आयामों की समझ एवं अन्तदृष्टि प्राप्त करें। ऐसा करने से शोध कार्य में उत्कृष्टता, आधुनिकता एवं नवीनता आती है। शोधकार्य करने से पूर्व इसकी आवश्यकता को महसूस कर शोधकर्ता ने समस्या से संबंधित साहित्य का अवलोकन कर समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन कर के लिया गया है

3.1 भारत में किए गए शोध अध्ययन

1) कुमार विनीत एवं अन्य (2013) "इफैक्ट ऑफ इमोशनल इंटलैजेन्सी आन एचीवमेंट मोटीवेशन, साइकोलॉजीकल एडजस्टमेंट एण्ड स्कारलिस्ट परफारमेंस ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट"। प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का उपलब्धि अभिप्रेरणा, मनोवैज्ञानिक समायोजन एवं शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए जयपुर शहर के 450 छात्रों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में घर द्वारा निर्मित EIS, मेहता

द्वारा निर्मित AVPI तथा सिन्हा एवं सिंह द्वारा रचित समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सांवेगिक बुद्धि का उपलब्धि अभिप्रेरणा और सामाजिक समायोजन पर सार्थक असर होता है।

2) सौजन्य शिनोय और एन. एस. थिंगुजम (2009) इनके द्वारा प्रस्तुत शोधकर्ता में व्यक्तित्व के सन्दर्भों में सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया। न्यादर्श के लिए 243 किशोर विद्यार्थी जो कि 11वीं कक्षा में पढ़ते थे, का चयन किया गया। स्व मूल्यांकन प्रपत्र द्वारा सांवेगिक बुद्धि, समायोजन एवं व्यक्तित्व का मापन किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि सांवेगिक बुद्धि का न्यूराटिसिज्म, एक्स्ट्रावर्जन, खुलापन एवं कान्सियसनेस के साथ सह संबंध होता है। सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक समायोजन के मध्य भी सहसंबंध देखा गया।

3.2 विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

1) सेकर एवं लारेंस (2016) ने यह जांचने के लिए कि क्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन ओर शैक्षणिक सम्प्राप्ति के बीच कोई सार्थक संबंध होता है, का अध्ययन किया था। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित था। शोधकर्ताओं ने न्यादर्श चयन हेतु स्तरीकृत यादृष्छिक विधि का प्रयोग किया। छात्रों को लिंग व स्थान के आधार पर स्तरीकरण किया गया था। इस कार्य हेतु तंजावुर जिले के 10 स्कूलों के 350 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को शामिल किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु सिन्हा एवं सिंह (2007) द्वारा विकसित समायोजन सूची एवं शैक्षणिक सम्प्राप्ति के मापन के लिए अन्वेषक द्वारा निर्मित की गयी प्रश्नावली थी। अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त निष्कर्ष दर्शाते हैं कि, शैक्षणिकसम्प्राप्ति के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के संवेगात्मक, सामाजिक और शैक्षिक समायोजन के बीच सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

2) अल्मजली, सरायरेह, लैड बेन्दनिया और कतनानी (2016) ने जार्डन विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मनोवैज्ञानिक समायोजन के स्तर का पता लगाया | जिसके परिणाम में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक मनोवैज्ञानिक समायोजन के बीच सकारात्मक समबन्ध का संकेत दिया |

4. समस्या का कथन

"किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन"

5. प्रकार्यात्मक परिभाषा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता :- भावनात्मक बुद्धिमत्ता , बुद्धि के क्षेत्र में यह एक नया प्रत्ययहै। इस प्रकार की बुद्धि का तात्पर्य उस दक्षता से हैं जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने तथा दूसरों के संवेगों का प्रभावी प्रबंधन करता है।

गोलमैन एवं बायोतिज के अनुसार :- "भावनात्मक बुद्धि से हमारा तात्पर्य स्व-जागरूकता, स्व-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता तथा सामाजिक दक्षताओं के सही समय पर प्रभावी ढंग से प्रयुक्त करने की क्षमता है।"

समायोजन :- समायोजन व्यक्ति की वह विशेषता है जिसके अनुसार वह अपने जीवन की मुख्य समस्याओं को समझता है, प्रतिक्रिया करता है व उनका समाधान करता है।

किशोरावस्था :- किशोरावस्था, बचपन और वयस्कता के मध्य वृद्धि और विकास का संक्रमणकालीन चरण कहलाता है | 12 वर्ष की आयु से 19 वर्ष तक की आयु के क्यक्ति को किशोर कहा गया है |

6. अध्ययन का उद्देश्य

1. किशोरों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |
2. किशोर बालकों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |
3. किशोर बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |
4. किशोर बालक एवं बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सह सम्बन्ध के अंतर का अध्ययन करना |

7. अध्ययन की परिकल्पना

इसके लिए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया -

1. किशोरों बालक एवं बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध का पाया जायेगा |
2. किशोर बालकों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध का पाया जायेगा |
3. किशोर बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाएगा |
4. किशोरों बालक एवं बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सह्संबंध में अंतर पाया जायेगा |

8. अध्ययन की परिसीमा

प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्नलिखित परिसीमाओं का निर्माण किया गया है :-

1. प्रस्तुत शोध हेतु रायपुर जिले का चयन किया गया है।

2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के अंतर्गत रायपुर नगर निगम का चयन किया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

4. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर के 5 विद्यालयों का चयन किया गया है।

5. प्रस्तुत अध्ययन में 100 किशोर विद्यार्थियों को लिया गया है, जिसमे 50 छात्र एवं 50 छात्राए सम्मिलित है।

9. शोध प्रविधि

शोध अध्ययन के प्रयुक्त प्रविधि का अपना विशिष्ट महत्व होता है। शैक्षिक तथा सामाजिक अनुसंधान में प्रविधियों के आधार पर आंकड़ों का एकत्रीकरण किया जाता है।

गुडस व हाट्स के अनुसार :- "प्रविधि के अंतर्गत विशिष्ट तरीके सम्मिलित हैं जिनके द्वारा अनुसंधानकर्ता अपने तथ्यों को उनके तार्किक या सांख्यिकी विश्लेषण के पूर्व एकत्र तथा कमबद्ध करता है।"

10. जनसंख्या

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु रायपुर जिले के अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के किशोर छात्रों एवं छात्राओं का चयन किया है। जनसंख्या के आधार पर जो अध्ययन किए जाते है। वे पैरामीटर कहलाते हैं, किन्तु अनुसंधानकर्ता के पास समय व साधन का अभाव होता है। अतः वह संपूर्ण जनसंख्या में कुछ ऐसे अंश चुन लेता है जिसमें जनसंख्या की विशेषताएं समााहित हो। वह फिर इस चुने अंशों से ही प्रदत्तों का संग्रहण करता है।

11. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य के उद्देश्य की पूर्ति के लिए छत्तीसगढ़ के रायपुर शहर का चयन किया गया है। रायपुर के 5 अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 व् 12 के 100 किशोर विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्रों एवं 10 छात्राओं का चयन किया गया है। कुल 5 विद्यालयों से 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया है। इन से प्राप्त परिणाम समग्र का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेगें।

12. समस्या के चर

स्वतंत्र चर :

1. वातावरण – शहरी
2. लिंग – बालक एवं बालिका
3. विद्यालय – अशासकीय

आश्रित चर : भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन योग्यता

13. उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए पूर्व निर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है। भावनात्मक बुद्धि के मापन हेतु डा. जे. सी. आजवानी, डा. ए.सेठी,

डा. गौतमी भट्पहरी और एम्. हुसैन के सांवेगिक बुद्धि परिक्षण तथा समायोजन चर के मापन हेतु प्रो. ए.के.पी. सिन्हा और प्रो. आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन परिक्षण का उपयोग किया गया है।

14. सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं निष्कर्ष प्राप्ति हेतु माध्य, प्रमाप विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

15. परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक 1

किशोर बालक एवं बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया जायेगा |

शून्य परिकल्पना क्रमांक 1.0

किशोरों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सम्बन्ध नही पाया जायेगा |

सारणी क्रमांक 4.1

किशोरों की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाली सारणी

चर	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	r मूल्य	परिणाम
भावनात्मक बुद्धि	100	265.84	29.9	0.4639	सार्थक सहसंबंध है |
समायोजन	100	50.67	10.22		

आरेख कं. 4.1

किशोरों की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाला आरेख

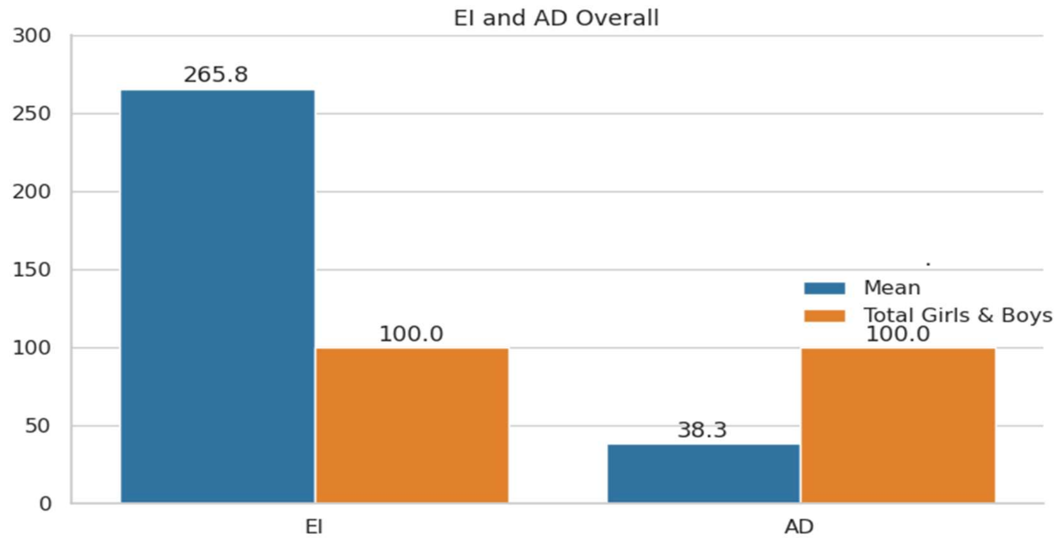

व्याख्या :-

सारणी कमांक 4.1 से स्पष्ट है कि किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 265.84 तथा प्रमाणिक विचलन 29.9 प्राप्त हुआ है तथा उनके समायोजन क्षमता पर मध्यमान 50.67 तथा प्रमाणिक विचलन 10.22 प्राप्त हुआ है एवं दोनों के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक की गणना की गई जो 0. 4639 प्राप्त हुआ है जों कि r तालिका के सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मूल्य 0.254 से अधिक हैं जो कि स्वतंत्रता अंश 98 पर सार्थक अंतर को दर्शाता है, अतः शोधकर्ता की परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है |

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना किशोरों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया जायेगा स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक 2

किशोर बालकों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के साथ सकारात्मक संबंध पाया जायेगा।

शून्य परिकल्पना क्रमांक 2.0

किशोर बालकों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सम्बन्ध नही पाया जायेगा |

सारणी क्रमांक 4.2

किशोरों बालकों की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाली सारणी

चर	बालकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	r मूल्य	परिणाम
भावनात्मक बुद्धि	50	263.22	30.48	0.2201	सार्थक सहसंबंध नही है |
समायोजन	50	48.58	11.82		

आरेख कं. 4.2

किशोर बालकों की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाला आरेख |

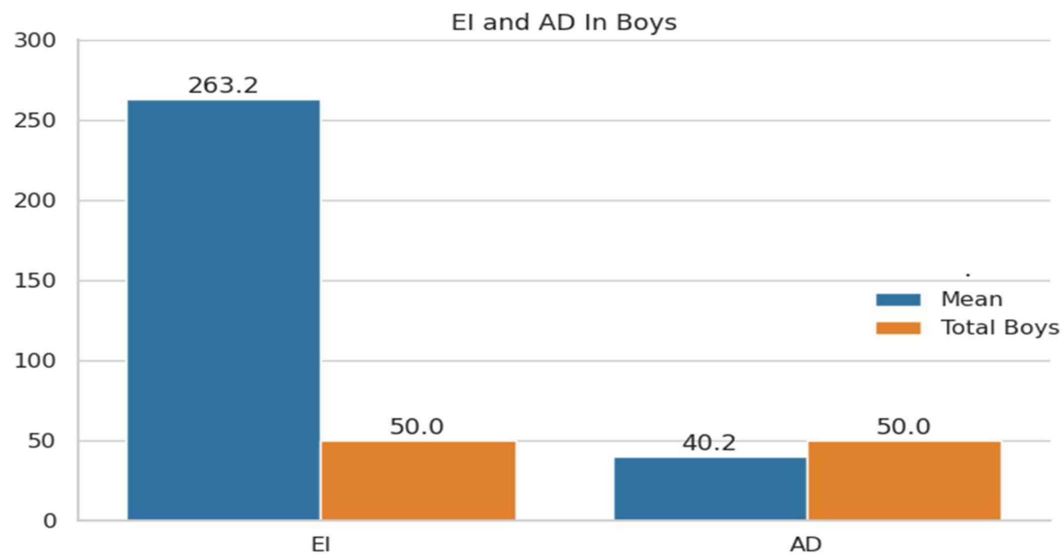

व्याख्या :-

सारणी कमांक 4.2 से स्पष्ट है कि किशोर बालकों के संवेगात्मक बुद्धिं का मध्यमान 263.22 तथा प्रमाणिक विचलन 30.48 प्राप्त हुआ है तथा उनके समायोजन क्षमता का मध्यमान 48.58 तथा प्रमाणिक विचलन 11.82 प्राप्त हुआ है, एवं दोनों के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक की गणना की गई जो 0.2201 प्राप्त हुआ है जों कि r तालिका के सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मूल्य 0.279 से कम हैं जो कि यह दर्शाता है की सार्थक सह सम्बन्ध नही है , अतः शोधकर्ता की परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है |

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किशोर बालको के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सकारात्मक संबंध नही पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना किशोर बालकों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के साथ सकारात्मक संबंध पाया जायेगा अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना किशोर बालकों के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सम्बन्ध नही पाया जायेगा स्वीकृत होती है |

परिकल्पना क्रमांक 3

किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के साथ सकारात्मक संबंध पाया जायेगा।

शून्य परिकल्पना क्रमांक 3.0

किशोर बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सम्बन्ध नही पाया जायेगा|

सारणी क्रमांक 4.3

किशोरों बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाली सारणी

चर	बालिकाओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	r मूल्य	परिणाम
भावनात्मक बुद्धि	50	268.46	29.38	0.8444	सार्थक सहसंबंध है ।
समायोजन	50	52.76	7.9		

आरेख कं. 4.3

किशोर बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन, आर (पीयर्सन सहसंबंध गुणांक) एवं परिणाम दर्शाने वाला आरेख

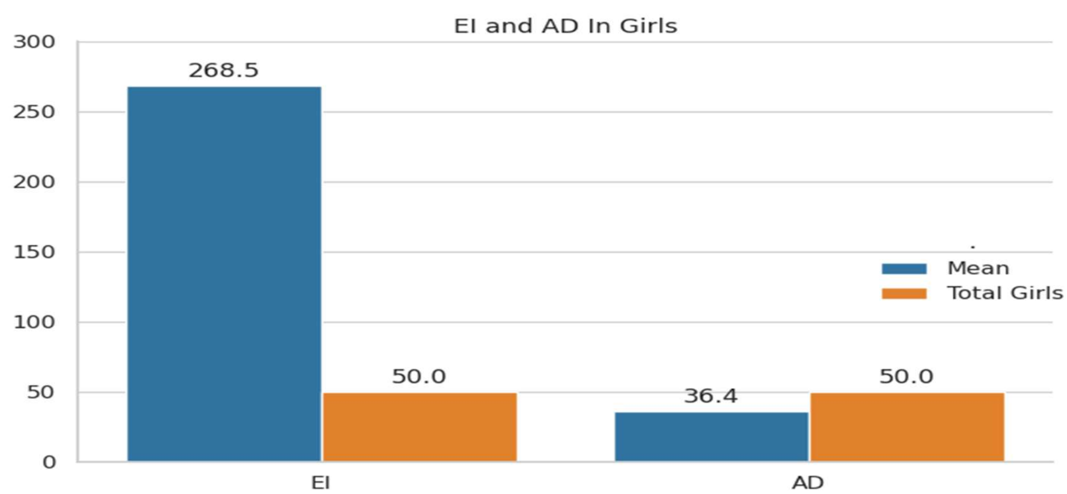

व्याख्या :-

सारणी कमांक 4.2 से स्पष्ट है कि किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धिं का मध्यमान 268.46 तथा प्रमाणिक विचलन 29.38 प्राप्त हुआ है तथा उनके समायोजन क्षमता का मध्यमान 52.76 तथा प्रमाणिक विचलन 7.9 प्राप्त हुआ है, एवं दोनों के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक की गणना की गई जो 0.8444 प्राप्त हुआ है जों कि r तालिका के सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मूल्य 0.361 से अधिक हैं जो कि यह दर्शाता है की सार्थक सह सम्बन्ध है , अतः शोधकर्ता की परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है |

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता के साथ सकारात्मक संबंध पाया जायेगा स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना किशोर बालिकाओं के भावनात्मक बुद्धि एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य कोई सम्बन्ध नही पाया जायेगा अस्वीकृत होती है |

परिकल्पना क्रमांक 4

किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के सहसंबंध में अंतर पाया जायेगा |

शून्य परिकल्पना क्रमांक 4.0

किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के सहसंबंध में कोई अंतर नही पाया जायेगा |

सारणी क्रमांक 4.4

किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के सहसंबंध में अंतर एवं परिणाम को दर्शाने वाली सारणी

चर	किशोर बालक एवं बालिकाओं की संख्या	किशोर बालकों की भावनामक बुद्धि व् समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध (r1)	किशोर बालिकाओं की भावनामक बुद्धि व् समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध (r2)	r1 के सापेक्ष z1	r2 के सापेक्ष z2	Z मान	सार्थक अंतर है या नही
भावनात्मक बुद्धि	100	0.2201	0.8444	0.2258	1.2363	4.898	0.05 पर सार्थक अंतर है|
समायोजन							

व्याख्या :-

विद्यालय में अध्ययनरत 100 किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि परीक्षण व समायोजन योग्यता परीक्षण किया गया। बालकों की भावनात्मक बुद्धि परीक्षण व समायोजन योग्यता के मध्य सहसंबंध r1 जो 0.2201 प्राप्त हुआ तथा r1 सापेक्ष z मान Z1 0.2258 होता है। इसी प्रकार बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि परीक्षण व समायोजन योग्यता के मध्य सहसंबंध r2 जो 0.8444 प्राप्त हुआ तथा r2 के सापेक्ष z मान, z2 मान 1.2363 होती है। बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन योग्यता के बीच सहसंबंध में अंतर है। इस अंतर की सार्थकता की जांच के लिये z मूल्य की गणना ही गई, जो 4.898 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक है | अतः यह अंतर सार्थक है।

16. निष्कर्ष :-

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि हमारी परिकल्पना "किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के सहसंबंध में अंतर पाया जायेगा " स्वीकृत होती है। तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है|

किशोर बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया गया। किशोर बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध, किशोर बालकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध से अधिक पाया गया। इसका संभावित कारण यह है कि बालिकाओं में भावनात्मक बुद्धि अधिक होती है उसका वे पूरी तरह से उपयोग विभिन्न प्रकार के समायोजन में करती हैं किंतु किशोर बालको में भावनात्मक बुद्धि के साथ समायोजन क्षमता का सहसंबंध बालिकाओं की भांति नही हो पाता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में समस्या कथन के आधार पर निर्मित परिकल्पनाओं में से तीन परिकल्पनाएं स्वीकृत हुई।

17. शैक्षिक उपयोगिता

1. **शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक**

यह अध्ययन शिक्षकों को यह समझने में सहायक होगा कि कैसे भावनात्मक बुद्धि किशोरों के समायोजन को प्रभावित करती है। शिक्षक छात्रों के व्यवहार को केवल अनुशासन के चश्मे से देखने के बजाय उसकी भावनात्मक पृष्ठभूमि को समझने की दिशा में संवेदनशील बन सकेंगे।

2. **शिक्षण विधियों का विकास**

शोध के निष्कर्ष भावनात्मक बुद्धि पर आधारित शिक्षण विधियों के विकास को प्रोत्साहित करेंगे, जैसे:

- जीवन कौशल आधारित शिक्षा (Life Skills Education)
- सहानुभूति एवं सहकार्य पर केंद्रित गतिविधियाँ
- समावेशी कक्षा प्रबंधन की रणनीतियाँ

3. **विद्यालयी काउंसलिंग सेवाओं में सुधार**

यह अध्ययन विद्यालयों में काउंसलिंग सेवाओं को सशक्त बनाने में मददगार होगा, क्योंकि यह स्पष्ट करेगा कि छात्रों की भावनात्मक ज़रूरतों को समझना कितना आवश्यक है। इससे विद्यालय में Guidance and Counselling कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकेगा।

4. **पाठ्यक्रम विकास में योगदान**

भावनात्मक बुद्धि और समायोजन से संबंधित निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम नियामक संस्थाएँ (जैसे NCERT, SCERT) सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में औपचारिक रूप से शामिल कर सकती हैं।

5.**अभिभावकों के लिए जागरूकता**

यह अध्ययन अभिभावकों को भी यह समझाने में सहायक होगा कि किशोरों के मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों को समझना कितना आवश्यक है। इससे वे बच्चों को भावनात्मक समर्थन देने की दिशा में अधिक सक्षम बन सकेंगे।

18. सुझाव

1. किशोरवय बालक एवं बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि और उचित समायोजन के बाधित होने के विषमताओं को जानने व परंपरागत मान्यताओं को खण्डित करके उनका नैतिक तथा सामाजिक व शैक्षिक रूप से मार्गदर्शन किया जा सकता है।

2. किशोर बालक – बालिकाओं के निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर द्वारा उत्पन्न मनोशारीरिक दुर्बलताओं की पहचान कर उनकी समायोजन की क्षमता या योग्यता में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सकती है।

3. व्यक्तिगत निर्देशन और संस्थागत शिक्षा देकर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर बालक बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सुधार किया जा सकता है।

4. शिक्षक, परामर्शदाता, अभिभावक संघ के माध्यम से माता-पिता एवं अभिभावकों के सहयोग को अधिक प्रभावी बनाकर किशोरों के अध्ययन के लिए उचित वातावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

5. उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों के बीच जो विंशमताएं, अंतर व असन्तुलन व्याप्त हैं उनकों जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। सरकार द्वारा लागू शिक्षा नीति को शिक्षा अधिकार अधिनियम जैसे नवीन कानून इन्हीं विषमताओं को दूर करने में एक सफल कदम होगा।

6. परामर्शदाताओं के द्वारा प्रत्येक विद्यालय में किशोर बालक – बालिकाओं को निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षा के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान कर उनमें व्याप्त विषमताओं व अन्तर को कम किया जा सकता है।

7. किशोरों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को परोक्ष व अपरोक्ष चर प्रभावित करते है। अतः नीति निर्माताओं, प्रशासकों, शिक्षको को किशोरों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की वृद्धि के सापेक्ष उनकी मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक समस्याओं को दूर करने हेतु उनके प्रति उपचारात्मक अधिगम से युक्त क्रियाओं को शैक्षिक प्रक्रियाओं में जोडने के लिए कार्यक्रम बनाने में सहायता प्रदान किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि किशोरवय बालक - बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि व् समायोजन क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर परिलक्षित होते है। इस कार्य हेतु माता-पिता और अभिभावकों को घर का माहौल स्वस्थ रखना होगा तथा शिक्षकों व् परामर्शदाताओं के द्वारा किशोरों को सीखने के नये-नये अनुभवों से अवगत कराकर उन्हें समान अवसर प्रदान करें ताकि उनके समायोजन में उत्पन्न विषमता या अन्तर को दूर किया जा सके। अतः एक दूसरे को जातीयता (लिंग) के आधार पर हीन भावना से नहीं देखना चाहिए। अध्ययन से संकेत मिलता है कि दोनों की लगभग समान समायोजन क्षमता है। अतः उनकी तुलना अन्य किसी आधार पर न करते हुए शिक्षकों, माता-पिता एवं अभिभावकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि छात्र व छात्राओं में लगभग समान समायोजन होने के कारण दोनों को ही समान असवर प्रदान किये जाए ताकि वे अपनी शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक वृद्धि कर सके। इसलिए परिवारों, कॉलेजों एवं अन्य स्थानों पर विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को लिंग के आधार पर तुलना करने से बचना चाहिए बल्कि उन्हें अभिप्रेरित कर स्वस्थ शैक्षिक परिवेश प्रदान किया जाए जिससे छात्र व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं उनकी क्षमता या योग्यता को पहचानकर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।

19. अनुकरणीय अध्ययन

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित परिणामों तथा उसके प्राप्त निष्कर्षों को आधार मानते हुए निम्नलिखित अनुसंधान क्षेत्रों में शोध कार्य करने हेतु सुझावों को लिपिबद्ध किया जा सकता है-

1. प्रस्तुत शोध रायपुर जिले के अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों पर किया गया है, इसे राज्य स्तर के अन्य शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध केवल रायपुर के परिपेक्ष्य में किया गया है. इसे वृहद स्तर पर छत्तीसगढ के परिपेक्ष्य में भी किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत शोध केवल कक्षा 11 व् 12 के किशोर विद्यार्थियों पर किया गया है. इसे अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध केवल विद्यालयीन किशोरों को लेकर किया गया है भविष्य में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत शोध में विभिन्न विषयों व् क्षेत्रों के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. प्रस्तुत शोध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं समायोजन को चरों में लिया गया है भविष्य में इसके अतिरिक्त समस्या समाधान क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक संप्राप्ति, नैतिक मूल्य, विद्यालयी निष्पादन, पारिवारिक सम्बन्ध, दुश्चिंता, सामान्य मानसिक योग्यता आदि विषयों के मध्य सम्बन्ध अथवा अंतर को देखने हेतु अध्ययन किया जा सकता है |

20. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा. सरिता. (2024). किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्म संकल्पना पर तुलनात्मक अध्ययन. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल एंड मलती डिसिप्लिनरी. उपलब्ध: https://rrjournals.com/

2. शर्मा, तरुण, & डा. बंसल. (2023). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स. उपलब्ध: https://www.ijcrt.org/

3. पाण्डेय, दीपा, & किरण. (2022). किशोरों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. आई. जे. आर. टी. आई. उपलब्ध: https://www.ijrti.org/

4. यादव, अजय कुमार सिंह. (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ करेंट साइंस, 20(3), 268-270. उपलब्ध: https://www.currentscience.ac.in/

5. सिंह, पवन कुमार. (2019). छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव. जिज्ञासा: ऐन इंटरडिसिप्लीनरी पीयर रिव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल, 12(6), 785-795. उपलब्ध: https://www.jigyasabhu.com/

6. यादव, सुरेन्द्र, & यादव, संध्या. (2018). एम.एड. स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. एनल्स ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी रिसर्च, 8(2), 108-112. उपलब्ध: https://eprajournals.com/IJMR/

7. रमेश डी. बाघमेर. (2018). कक्षा 10वीं स्तर के छात्रों के बीच समायोजन का अध्ययन. इंटरनेशन जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइनटिफिक रिसर्च एण्ड डेवलेपमेंट (IJRSRD), 2(2), 8-12. उपलब्ध: https://www.ijtsrd.com/

8. यादव, अजय कुमार सिंह. (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी.

9. यादव, जितेन्द्र कुमार. (2015–2017). किशोरावस्था में बालक के संवेगिक बुद्धि, सामान्य मानसिक योग्यता एवं समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर.

10. जायसवाल, विशाल कुमार. (2016). उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुदानित एवं गैर-अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं अनुशासन का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी.

11. सिंह, रंजीत. (2014). उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध, संवेगात्मक बुद्धि एवं नियंत्रण अवस्थिति में सम्बन्ध. अप्रकाशित शोध प्रबंध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

12. यादव, एम.पी. (2011). वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित हाईस्कूल कक्षा के छात्रों की बुद्धि, नैतिक मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर.

13. गुप्ता, तारकेश्वर. (2011). इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगिक समायोजन व विद्यालयी निष्पादन से सम्बन्ध. अप्रकाशित शोध प्रबंध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

14. लाल, अनोखे. (2002). सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अनाथ विद्यार्थियों के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में एक अध्ययन. अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर.

15. होएव, एम., डुबास, जे. एस., आइशेल्सहेम, वी. आई., लान, वी. पी., स्मेंक, डब्ल्यू., और गेर्स, जे. आर. एम. (2009)। पालन-पोषण और अपराध के बीच संबंध: एक मेटा-विश्लेषण। जर्नल ऑफ एबनॉर्मल चाइल्ड साइकोलॉजी, 37(6), 749–775। https://doi.org/10.1007/s10802-009-9310-8

16. जेरी, जी. (2012)। अंतरराष्ट्रीय छात्रों की समायोजन संबंधी समस्याएँ एवं व्यवहार। प्रोफेसर, अंग्रेज़ी शिक्षा विभाग, पुरान नेशनल यूनिवर्सिटी (कोरिया)। *(प्रकाशन स्थान स्पष्ट नहीं है)*

17. सालोवे, पी., और मेयर, जे. डी. (1990)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता। इमैजिनेशन, कॉग्निशन एंड पर्सनैलिटी, 9(3), 185–211। https://doi.org/10.2190/DUGG-P24E-52WK-6CDG

18. गोलमैन, डी. (1995)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: क्यों यह बुद्धिलब्धि (IQ) से अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकती है। न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स।

19. मेयर, जे. डी., सालोवे, पी., और कारूसो, डी. आर. (2004)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: सिद्धांत, निष्कर्ष एवं निहितार्थ। साइकोलॉजिकल इन्क्वायरी, 15(3), 197–215। https://doi.org/10.1207/s15327965pli1503_02

20. बार-ऑन, आर. (1997)। बार-ऑन इमोशनल कोशंट इन्वेंटरी (EQ-i): तकनीकी मार्गदर्शिका। टोरंटो: मल्टी-हेल्थ सिस्टम्स।

21. पेट्रीड्स, के. वी., और फर्नहैम, ए. (2001)। गुणात्मक भावनात्मक बुद्धिमत्ता: स्थापित गुण-संवर्गों के संदर्भ में एक मनोमितीय अध्ययन। यूरोपियन जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी, 15(6), 425–448। https://doi.org/10.1002/per.416

22. शुट्टे, एन. एस., मालूफ, जे. एम., हॉल, एल. ई., हेगर्टी, डी. जे., कूपर, जे. टी., गोल्डन, सी. जे., और डोर्नहेम, एल. (1998)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मापन का विकास और प्रमाणीकरण। पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 25(2), 167–177। https://doi.org/10.1016/S0191-8869(98)00001-4

23. ब्रैकेट, एम. ए., रिवर्स, एस. ई., और सालोवे, पी. (2011)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक और कार्यस्थल सफलता के लिए निहितार्थ। सोशल एंड पर्सनैलिटी साइकोलॉजी कम्पास, 5(1), 88–103। https://doi.org/10.1111/j.1751-9004.2010.00334.x

24. चेर्निस, सी. (2010)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक संकल्पना की स्पष्टता की ओर। इंडस्ट्रियल एंड ऑर्गनाइजेशनल साइकोलॉजी, 3(2), 110–126। https://doi.org/10.1111/j.1754-9434.2010.01231.x

25. ज़ाइडनर, एम., मैथ्यूज, जी., और रॉबर्ट्स, आर. डी. (2004)। कार्यस्थल में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक आलोचनात्मक समीक्षा। अप्लाइड साइकोलॉजी, 53(3), 371–399। https://doi.org/10.1111/j.1464-0597.2004.00176.x